भारतीय जनजातीय समुदाय :
साहित्यिक लेखन एवं दृष्टि

संपादक

प्रो. सतीश गंजू • डॉ. रवि कुमार गोंड़

समर्पण

'यह पुस्तक उन सभी जनजाति क्रांतिकारियों एवं बुद्धिजीवियों को समर्पित है, जिन्होंने अपनी मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया।'

शाखा
अनंग प्रकाशन / ठा. गजराज सिंह, भगतपुर,
पोस्ट - भगतपुर, जिला- अलीगढ़ 203132

ISBN : 978-93-80845-45-6

अनंग प्रकाशन
फोन नं. 09350563707

सर्वाधिकार : संपादक

प्रथम संस्करण : 2018
मूल्य : 395 रूपये
ई-मेल : anangprakashan@gmail.com

अनंग प्रकाशन, बी-107/1, गली मन्दिर वाली, समीप रबड़ फैक्ट्री, उत्तरी घोण्डा, दिल्ली-110053, शब्द-संयोजन : सिद्ध-भभूति ग्राफिक्स, दिल्ली-110053, मुद्रक : राजोरिया प्रिन्टर्स, दिल्ली-32 से मुद्रित।

अनुक्रमणिका

1. जनजातीय भाषायें 8वीं अनुसूची में!
- प्रोफे. के. एम. मेत्री 7
2. भारतीय गौरव-वृद्धि में जनजातियों का योगदान
- महादेव टोप्पो 23
3. गोंडवाना की विरासत को मिटाया जा रहा है!
- डॉ. जनार्दन गोंड 29
4. झारखण्ड के जनजातीय समुदायों की पहचान और उनकी सांस्कृतिक विरासत
- डॉ0 सावित्री कुमारी बड़ाईक 33
5. मैत्रेयी पुष्पा द्वारा रचित 'अल्मा कबूतरी' उपन्यास में अभिव्यक्त कंजर जनजाति समाज का चित्रण
- डॉ. रवि कुमार गोंड़ 54
6. 'मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ' : विचारधारा, दर्शन एवं राजनैतिक व्यवस्था
- अभिनव 61
7. बस्तर के अतीत और वर्तमान त्रासदी पर केन्द्रित उपन्यास 'आमचो बस्तर'
- डॉ. गीता जगड़ 67
8. बस्तर की चीख को शब्द बद्ध करता उपन्यास 'आमचो बस्तर'
- तारसेम गुजराल 76
9. THE MYSTERIOUSAILMENT OF RUPI BASKEY उपन्यास में संथाल जनजाति की मान्यताएँ, विश्वास एवं मूल्य
- कुलदीप कुमार पाण्डेय 88
10. 'आमचो बस्तर' उपन्यास में जनजाति समाज
- रमेश नैयर 94
11. वर्तमान शासन पद्धति एवं जनजाति समाज (संदर्भ : क्यों बेजुबान हैं, आदिवासी?)
- लल्टू कुमार 98

12. सत्ता बनाम असुर जनजाति का अनवरत संघर्ष (हिंदी उपन्यास "ग्लोबल गाँव के देवता" के विशेष सन्दर्भ में)
– शिव दत्त 107

13. 'बाजत अनहद ढोल' उपन्यास : जनजाति शोषण और प्रतिरोध
– शुभम सिंह 115

14. जनजातीय समाज की समस्याएँ को उकेरती गैर जनजातीय लेखनी
– डॉ. सुरेश सिंह राठौड़ 123

15. जनजातीय समूह का सामाजिक स्वरूप एवं उनके विकास की वास्तविकता, एक विवेचन
– डॉ. विवेक शर्मा 133

16. भारतीय जनजातीय साहित्य के वैचारिक सूत्र
– प्रोफेसर हेमराज मीणा 137

17. हिमालय अंचल की जनजातीय बोली-भाषाओं के संरक्षण
– प्रोफेसर हेमराज मीणा 141

जनजातीय समूह का सामाजिक स्वरूप एवं उनके विकास की वास्तविकता : एक विवेचन

डॉ. विवेक शर्मा

1981 की जनगणना के समय भारत में अनुसूचित जनजातियों की कुल जनसंख्या 5,16, 28, 638 थी। यह देश की कुल आबादी का 7.76 प्रतिशत था। जनजातीय जनसंख्या पंजाब एवं हरियाणा को छोड़कर देश के सारे प्रदेशों में बिखरी हुई है। जबकि चण्डीगढ़, दिल्ली और पांडिचेरी को छोड़कर ये सभी केन्द्रशासित क्षेत्रों में जनजातीय समूह फैलै हैं। जनजातीय समाज का विश्लेषण यदि दूसरे प्रकार से किया जाये तो कुल अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या में 93.80 प्रतिशत ग्रामीण है और 6.20 प्रतिशत नगरों में रहती है। जनजातीय समाज सर्वाधिक 23.22 प्रतिशत मध्यप्रदेश में पाया जाता है। राज्यों की जनसंख्या में लक्ष्यद्वीप की जनसंख्या का कुल 93.82 प्रतिशत भाग जनजातीय समाज का है। जनजातीय समुदायों के आकार की दृष्टि से विचार करें तो सबसे बड़े आकार की जनजाति गोंड समुदाय की है जिनकी संख्या लगभग चार करोड़ है। इसके अतिरिक्त भील, संथाल और मीणा भी पर्याप्त संख्या में हैं। जबकि 1981 की जनगणना के अनुसार हैसा, तंगसा, होतांग, कातीसंसगा जैसे जनजातीय समूहों में एक-एक संख्या है, जो लुप्त होने के कगार पर हैं। 1981 की जनगणना के अनुसार कुल पाँच ऐसी जनजातियाँ हैं जिनकी जनसंख्या एक-एक है।

वेशभूषा की दृष्टि से अनोखापन ही जनजातियों की विशिष्टता है। जिनमें सिर की सज्जा, आभूषण, अङ्ग राग इत्यादि उल्लेखनीय हैं।

आहार की बात की जाये तो जनजातीय समाजों पर किये गये अध्ययनों के अनुसार केवल तीन समुदायों को छोड़कर शेष सभी मासाहारी हैं। शाकाहारी आदिम जातियाँ हैं टोडा, रबारी और भरवाड़। टोडा जनजाति में ईसाईकरण बढ़ने से कुछ ने मासभक्षण आरम्भ कर दिया है। इसके अतिरिक्त भक्ति आंदोलन या

दृष्टिगोचर होती है। जनजातीय स्त्रियाँ ही कई सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का क्रियान्वयन करती हैं। किन्तु यह भी सत्य है कि राजनीतिक मामलों में उनका अधिक हस्तक्षेप नहीं रहता। जहाँ एक ओर स्त्रियाँ पारिवारिक आय में योगदान देती हैं, वहीं पारिवारिक व्यय पर भी उनका नियन्त्रण दृष्टिगोचर होता है, जो जनजातीय समुदाय में नारी सशक्तिकरण का द्योतक है। कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि जनजातीय समाज में स्त्रियों का उचित स्थान है।

समाजिक एवं प्रशासनिक नियन्त्रण की जनजातीय समुदायों में नियन्त्रण के स्वरूप की बात करें तो सामाजिक नियन्त्रण की संस्थायें पूर्ववत् हैं। किन्तु अब उनके बीच चुनाव के द्वारा गठित पंचायतें स्थान लेती जा रहीं हैं। कही पुलिस का हस्तक्षेप भी देखने को मिल रहा है।

धर्म भारत की 59.40 प्रतिशत जनजातीय समुदाय हिन्दू धर्म का पालन करते हैं, जबकि 23.40 प्रतिशत समुदाय ईसाई धर्म का पालन करते हैं। 6.90 प्रतिशत जनजातीय समुदाय मुस्लिम धर्म के अनुयायी हैं। इन तथ्यों में एक ध्यान देने वाली बात यह है कि 23.40 प्रतिशत जनजातीय समुदाय ईसाई धर्म को मानने वाले हैं, उसका सबसे बड़ा कारण है कि ईसाई मिशनरियों नें हमारे जनजातीय समुदायों में सर्वाधिक मतान्तरण को किया है। लेकिन वनवासी कल्याण आश्रम इत्यादि संस्थाओं के प्रयासों से मतान्तरण की इन घटनाओं में अब कुछ कमी देखने को मिल रही है। समुदायों में ग्राम एवं गौत्र देवताओं की उच्चता पूर्ववत् ही विद्यमान है। जनजातिय समुदाय अब धार्मिक आन्दोलनों से जुड़ रहे हैं।

सामान्यत: जनजातियाँ किसी सामाजिक छुआछूत से ग्रसित नहीं हैं। वे अब भी जातीय व्यवस्था से काफी हद तक दूर हैं। अत: हम कह सकते हैं कि समरसता के लिये जनजातीय समूह सब के लिये आदर्श स्वरूप हैं।

कला, कौशल जनजातीय समुदाय निश्चित रूप से कौशलधारीय और शिल्पकार हैं। इनमें बर्ली, रबारी तथा रथवा जनजातियाँ प्रमुख हैं। 43.90 प्रतिशत जनजातियाँ बांस शिल्प से जुड़ी हैं। जनजातीय समुदाय संगीत से भी व्यापक रूप से सम्बद्ध है और नृत्य तो जनजातीय समुदायों की पहचान है। सामान्यत: स्त्री–पुरुष दोनों नृत्य करते हैं।

विकास के तथ्य कई जनजातीय समुदायों से लोगों ने उद्यमी, व्यवसायी, शिक्षक, प्रशासक, डॉक्टर, इन्जीनियर एवं कुशल राजनीतिक बनकर ऊभरे हैं। लगभग 50.60 प्रतिशत जनजातीय समूह तक बिजली की पहुँच हो चुकी है, जिसमें

निरन्तर वृद्धि हो रही है। अधिकतर जनजातीय समाज ईंधन के लिये लकड़ी पर ही निर्भर है लेकिन उज्ज्वल योजना जैसी महत्त्वपूर्ण योजना से जनजातीय समुदाओं तक रसोई गैस की पहुँच बढ़ रही है। आज सरकार की कई योजनायें भी आदिवासी समाज पर केन्द्रित हैं। साथ ही जिन आदिवासी क्षेत्रों पर कभी नक्सली छत्र फैला हुआ था, आज उन क्षेत्रों में भी बड़े पैमाने पर सड़कों का निर्माण कर विकास की गाथा लिखी जा रही है।

उपर्युक्त तथ्यों की रोशनी में स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि देश के आदीवासी विकास एवं परिवर्तन के चौराहे पर खड़े हैं। निस्सन्देह जनजातीय समुदाय का विकास अनिवार्य है लेकिन सांस्कृतिक अस्मिता की रक्षा भी अनिवार्य है। अत: जनजातीय समुदाय के सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास के सन्तुलन से उनका विकास होगा और भारत भी परम वैभव को प्राप्त कर सकेगा।

सहायकाचार्य:, संस्कृत विभाग:
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय:, धर्मशाला